पाठ 10. माली काका

पाठ को बच्चे कक्षा में हाव-भाव सहित पढ़ेंगे, इससे उनके श्रवण, वाचन व लेखन-कौशल का विकास होगा। माली काका के चरित्र से वे अच्छे कार्य करना सीखेंगे। उनमें दूसरों के लिए कुछ करने की भावना जागेगी। वे अच्छे संस्कार सीखेंगे। उनमें परोपकार की भावना जागेगी।

पाठ की भूमिका

अध्यापक/अध्यापिका बच्चों के साथ परोपकार के जीवन पर चर्चा करें। परोपकारी लोग तथा प्रकृति में से भी परोपकार करने वाले उदाहरण बच्चों के सामने रखें। जैसे – नदी, पेड़ आदि। जो सिर्फ़ अपने लिए जीता है, वह स्वार्थी कहलाता है। हमें अपने जीवन को परोपकार में भी लगाना चाहिए। जो लोग अपना जीवन दूसरों के लिए जीते हैं वे ही ईश्वर को अच्छे लगते हैं।

पाठ का परिचय

बूढ़े माली काका बगीचे में पेड़ लगा रहे थे। उन्हें पेड़ लगाते देख राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। राजा ने उनसे जानना चाहा कि जब वह इतने बूढ़े हो गए हैं तो पेड़ लगाकर वह क्या करेंगे। पेड़ तो कम-से-कम दस-पंद्रह वर्ष बाद फल देता है। माली काका ने उन्हें बताया कि वह जिन पेड़ों के फल खा रहे हैं, वे पेड़ उनके बाप-दादाओं ने लगाए थे और अब जो पेड़ वह लगा रहे हैं उनके फल उनके बेटे-बेटियाँ और नाती-पोते खाएँगे। राजा को यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने माली काका को दरबार में बुलाकर ढेर सारा इनाम दिया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

अपना जीवन सिर्फ़ अपने लिए जीने वाले लोग स्वार्थी होते हैं। यदि इस धरती पर सभी स्वार्थी ही जन्म लेते तो दुनिया आगे न चलती। दुनिया को आगे बढ़ाने वाला परोपकार ही है। दूसरे के प्रति कुछ करने की भावना ही इस दुनिया के बने रहने का आधार है।

पाठ का वाचन

पाठ का आदर्श वाचन कक्षा में करें। वाचन करते समय उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखें तथा उन शब्दों का दो-तीन बार उच्चारण भी करें। पाठ का वाचन करते समय इस बात का ध्यान रखें कि वाचन एक-एक शब्द का और धीरे-धीरे हो। हर शब्द बिलकुल साफ़ व ऊँची आवाज़ में बोला गया हो।

महत्वपूर्ण चर्चा

'परोपकार' शब्द का अर्थ व उसके विभिन्न रूपों के बारे में बच्चों से चर्चा करें। भूखे को रोटी खिलाना, दीन-दुखियों की सेवा करना, रोते हुए को हँसाना, प्यासे को पानी। प्रकृति से कुछ उदाहरण लेकर बच्चों को समझाएँ व उनसे चर्चा करें। जैसे – पेड़, नदी। बच्चों से जानें कि उनके घर में कौन-किसके लिए क्या-क्या काम करता है।